

मैं पैदल चल रहा हूँ
जाने कब तक घर को पहुंचूंगा,
कि रस्ता दूर तक है
जी के या फिर मर के पहुंचूंगा।

हैं अब ये पैर बढ़ते ही नहीं अब बोझ लेकर के,
मगर जाऊँ किधर किसको ये अपना बोझ देकर के;
ये केवल गठरियों का बोझ ही मुझ पर कहां मालिक,
मैं चलता जा रहा किस्मत के अपने भार लेकर के।

सुना है कि विदेशों में भी अपने काम करते हैं,
वहां होटल में प्लेटें धो के भी वे नाम करते हैं;
कई है कंपनी में भी बड़े पैसे कमाते हैं,
नफा ना एक धेला भर भी अपने देश लाते हैं।

मगर उनको लिवाने को हवाई यान जाते हैं,
वंदे भारती करते विदेशी घर लिवाते हैं;
हम अपना सर्व देकर भी यहां कुछ भी न पाते हैं,
बीमारी, भूख मैं दर दर की ठोकर रोज खाते हैं।

हमें मरता हुआ छोड़ा हमारी सुध कभी ना ली,
किराए के लिए तुमने तो सर से छत भी सरका ली;
पराया कर हमें तुमने सदा ही स्वयम् का सोचा,
हमारी जो भी पूंजी थी उसे भी लूट कर खा ली।

तुम्हारे महल की ईंटों में मेरा ही पसीना है,
तुम्हारी साफ सड़कों पर से कचरा हमने बीना है;
तुम्हारी नालियों को साफ कर हमने ही रखा है,
तुम्हारे कारखानों में बिताया हर महीना है।

मगर तुमने मुझे इस रोज जीवन तक नहीं बख्शा,
बीमारी भूख और तकलीफ से भी की नहीं रक्षा;
हैं चलते अब तुम्हारा सर्व तुमको ही मुबारक हो,
तुम्हारे शहर से तो गांव मेरा लाख है अच्छा।

बहुत है राह देखी अब हमारा धैर्य टूटा है,
कि पैदल चल रहे घर को तुम्हारा साथ झूठा है;
है जो भी बच गया उसको समेटे गांव जाना है,
इसी संकल्प से मुझ में यह नूतन प्राण फूटा है।

मैं चलता हूँ मेरा परिवार मेरे संग चलता है,
यह तपती धूप में और भूख से बेटा मचलता है;
कहीं पत्नी रुको मत अब हमें जल्दी पहुंचना है,
पसीने संग पैरों से भी पल-पल खूँ निकलता है।

है मंजिल दूर अब भी ठौर कोई ना ठिकाना है,
बताऊं क्या मैं बेटे को नया कोई बहाना है;
कहां है आ गया अब घर है बाकी कुछ कदम चलना,
वहां तेरे लिए इक स्वर्ण का सुंदर खिलौना है।

वहां खेतों में गैया मधुर गीतों सी रंभाती है,
हरे पेड़ों पर चिड़िया मुक्त होकर गीत गाती है;
वहां पैसों से अपनापन कोई तौला नहीं करते,
है निश्चल प्रेम जिसमें सभ्यता भी मुस्कुराती है।

सुखद अनुभूति से भर पांव में तेजी से आती है,
मगर थकते हुए तन में भी पीड़ा भर सी जाती है;
हो जल की खोज में ज्यों मृग बढ़ा ही जा रहा जैसे,
पथिक मैं बढ़ रहा पैदल हताशा हाथ आती है।

दुखी मन सोचता हूं,
जाने कब तक घर को पहुंचूंगा;
कि रस्ता दूर तक है,
जी के या फिर मर के पहुंचूंगा।

है अब बढ़ते नहीं ये पैर इतना बोझ लेकर के,
मगर जाऊं किधर किसको ये अपना बोझ देकर;
ये केवल गठरियों का भार ही मुझ पर कहां मालिक,
मैं चलता जा रहा किस्मत के अपने भार लेकर के।